IJSSRA l ISSN (online): 3107-6238
January-March 2026 l Vol. 1 l Issue 4

श्रीमद्भगवद्गीता में शैक्षिक मूल्यों का माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन

[1] **डॉ. अनीता शर्मा**

[1]79, प्रियदर्शिनी प्रिस्टिन, भोपाल, मध्य प्रदेश
Email: ariyabharadwaj1121@gmail.com
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19484935
Received on: **26/03/2026** Accepted on: **29/03/2026** Published on: **09/04/2026**

सारांश:

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, मूल्यों और दृष्टिकोण को आकार देती है। शैक्षिक मूल्य शिक्षा प्रणाली के स्तम्भ हैं जो हमें सफल और जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं। शैक्षिक मानवीय मूल्यों को भी जन्म देते है जो एक सुसंस्कृत समाज के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण है। शैक्षिक मूल्यों कि दृढ़ता के लिए आत्मनियंत्रण, धैर्य एवं मानसिक स्थिरता आवश्यक है। शोध का मुख्य उद्देश्य श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक मूल्यों का माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन था। न्यादर्श के रूप में 1000 विद्यार्थियों को प्रस्तावित किया गया था जिसमें से 860 विद्यार्थियों से प्रदत्त प्राप्त हुए। इसमें अशासकीय विद्यालय के 500 विद्यार्थियों में से 452 विद्यार्थी तथा शासकीय विद्यालय के 500 विद्यार्थियों में से 408 विद्यार्थियों के प्रदत्त संकलित किए गए। शोध कार्य से निष्कर्ष प्राप्त हुए कि - विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल जैसे सह-अस्तित्व, संवाद-कुशलता और सहिष्णुता के गुण निरंतर पुष्ट हो रहे हैं। टीमवर्क और संचार के प्रति सजगता, उनमें नेतृत्व क्षमता, उत्तरदायित्व-बोध एवं पारस्परिक सम्मान की भावना को विकसित कर रही है। योग एवं ध्यान के अभ्यास द्वारा वे मानसिक शांति, आत्मनियंत्रण और एकाग्रता को जीवन में आत्मसात कर रहे हैं। विभिन्न संस्कृतियों की जानकारी प्राप्त करने से वे बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण, वैश्विक नागरिकता और सहिष्णुता की भावना को पोषित कर रहे हैं। पारिवारिक सेवा और दायित्व के प्रति जागरूकता, उनमें अनुशासन, विनम्रता और करुणा जैसे गुणों को गहन बना रही है। सेवा और दया का भाव उनके भीतर सामाजिक उत्तरदायित्व, सहानुभूति और सहृदयता की भावना को विकसित कर रहा है। आत्म-नियंत्रण और धैर्य के अभ्यास से वे संतुलित निर्णय, तनाव प्रबंधन और आत्मबोध की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

प्रस्तावना:

श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को कुरुक्षेत्र की रणभूमि में प्रदान किए गए दिव्य उपदेश "श्रीमद्भगवद्गीता" के रूप में न केवल अध्यात्म का अनुपम ग्रंथ हैं, अपितु यह भारत की सनातन शिक्षा दृष्टि का भी आदर्श प्रतिबिंब है। गीता केवल युद्ध का शास्त्र नहीं, अपितु यह जीवन की प्रत्येक चुनौती का समाधान प्रदान करने वाला ज्ञान सागर है, जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान के माध्यम से मानव जीवन के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त किया गया है। भारतीय शिक्षा-दर्शन में 'शिक्षा' केवल ज्ञान-प्रदान की प्रक्रिया न होकर आत्मानुशासन, विवेक, नैतिकता, समदृष्टि और आत्मबोध का समन्वित विकास मानी गई है। शिक्षा का उद्देश्य केवल एक कुशल कर्मी या बुद्धिजीवी का निर्माण करना नहीं है, अपितु एक ऐसे समग्र और संतुलित व्यक्तित्व का विकास करना है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धैर्य, करुणा, विवेक, सहिष्णुता, उत्तरदायित्व तथा नैतिक दृढ़ता के साथ आचरण कर सके। शैक्षिक मूल्य जैसे कि आत्मानुशासन, एकाग्रता, स्वावलंबन, संवाद-कौशल, न्यायप्रियता, एवं रचनात्मकता—श्रीमद्भगवद्गीता के शाश्वत संदेशों से अनुप्राणित होते हैं। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी में केवल ज्ञान की वृद्धि नहीं होती, अपितु उनके भीतर अंतर्निहित सद्गुणों का जागरण होता है, जो समाज और राष्ट्र निर्माण की दिशा में उन्हें प्रेरित करता है। गीता के अनुसार सत्त्वगुण ही वह तत्व है जो शिक्षा में स्थिरता, पवित्रता और आत्मज्ञान को जन्म देता है। सात्त्विक धृति व्यक्ति को इन्द्रिय संयम, मानसिक स्थिरता और लक्ष्यबद्ध समर्पण प्रदान करती है, जो शिक्षा का सार है। इस प्रकार गीता न केवल आध्यात्मिक चेतना का ग्रंथ है, बल्कि एक आदर्श शैक्षिक दर्शन का पथप्रदर्शक भी है। विद्यार्थियों के सभी गुणों जैसे अनुशासन, एकाग्रता, स्वावलंबन, जिज्ञासा, आत्मनियंत्रण, विवेक, तथा उत्तरदायित्व का संतुलित विकास शैक्षिक मूल्यों की स्थापना द्वारा संभव है। इन मूल्यों के माध्यम से न केवल अकादमिक प्रगति होती है, अपितु मानसिक स्थिरता, नैतिकता एवं आंतरिक अनुशासन भी विकसित होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित शैक्षिक आदर्श व्यक्ति को आत्म-साक्षात्कार की दिशा में अग्रसर करते हैं, जिससे विद्यार्थी एक समर्पित, विवेकशील और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक के रूप में विकसित होता है। मूल्यों का ज्ञान एवं आचरण हमारे लिए आवश्यक है। हमारे लिए मूल्यों का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, अपितु मूल्यों को आचरण में लाना अधिक महत्वपूर्ण है।

II. शैक्षिक मूल्य

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन या सूचना संप्रेषण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की वह साधना है, जो मनुष्य को आत्मचिंतन, आत्मानुशासन और आत्मबोध की ओर उन्मुख करती है। जब शिक्षा में केवल बौद्धिकता नहीं, बल्कि चारित्रिक दृढ़ता, नैतिक विवेक और आध्यात्मिक चेतना का समावेश होता है, तभी वह शैक्षिक मूल्य कहलाती है।

शैक्षिक मूल्य जीवन के वे आदर्श हैं, जो विद्यार्थी के चिन्तन, व्यवहार और निर्णय को सत्य, न्याय, उत्तरदायित्व और करुणा की दिशा में उन्नत करते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में शिक्षा को केवल जानकारी नहीं, अपितु आत्मानुभूति और स्थिर बुद्धि की ओर ले जाने वाला साधन माना गया है। सात्त्विक धृति को गीता ने उस संकल्पशक्ति के रूप में वर्णित किया है, जो विद्यार्थी को लक्ष्य की ओर डगमगाए बिना अग्रसर करती है।

"धृत्या यया धारयते मनः प्राणेन्द्रियक्रियाः।

योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी॥" (गीता 18/33**)**

जो धृति (स्थिरता, दृढ़ता) योगयुक्त और अविचल भाव से मन, प्राणों और इन्द्रियों की क्रियाओं को नियंत्रित एवं संचालित करती है, वह सात्त्विक धृति कहलाती है। यह श्लोक केवल मानसिक स्थिरता की बात नहीं करता, बल्कि यह शिक्षा के मूल आधार - आत्मनियंत्रण, अनुशासन, और एकाग्रता का भी निर्देश देता है। सात्त्विक धृति वह शक्ति है जो विद्यार्थी को लक्ष्य के प्रति समर्पण, अध्ययन में निरंतरता, और परिस्थितियों में अडिग रहने का साहस देती है। यह शैक्षिक मूल्य न केवल ज्ञानार्जन को संभव बनाता है, बल्कि चरित्र निर्माण और उत्तरदायित्व की भावना को भी सुदृढ़ करता है। श्रेष्ठ शिक्षा वही है जो मन को चंचलता से मुक्त कर स्थिर करती है, इन्द्रियों को संयमित करती है, और आत्मा से जुड़े होने का विवेक प्रदान करती है। ऐसी शिक्षा ही आत्मसंयम, अनुशासन, विवेकशीलता, लक्ष्य के प्रति समर्पण और मानसिक स्थिरता जैसे गुणों को पोषित करती है – जो शैक्षिक मूल्यों के मूल स्तंभ हैं। विद्यार्थियों के सभी गुणों जैसे धैर्य, अनुशासन, स्वावलंबन, आत्मनियंत्रण, करुणा, जिज्ञासा, संतुलन एवं एकाग्रता का सम्यक् विकास शैक्षिक मूल्यों के माध्यम से ही संभव है। यह मूल्य न केवल उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों को दिशा देते हैं, बल्कि उन्हें समर्पित नागरिक, जागरूक समाजसेवी और सजग आत्मा बनने की ओर प्रेरित करते हैं।

III. शोध का उद्देश्य

श्रीमद्भगवद्गीता में शैक्षिक मूल्यों का माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।

IV. शोध की परिकल्पना

H_{01} - श्रीमद्भगवद्गीता में शैक्षिक मूल्यों का माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

V. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में विवरणात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्शन में भोपाल जिले के 20 शासकीय एवं 20 अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया था। जिसमें कक्षा नवमी एवं दसवीं के 1000 विद्यार्थियों के यादृच्छिक न्यादर्श में से 860 विद्यार्थियों से जानकारी प्राप्त हुई। प्रदत्तों के संकलन हेतु जीवन मूल्यों से सम्बंधित स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया जिसमें कुल सोलह प्रश्न थे।

VI. विश्लेषण एवं व्याख्या

विद्यार्थियों से प्राप्त प्रश्नावली का प्रश्नवार विश्लेषण किया गया जिसका विवरण तालिका 1.1 में अवलोकनीय हैं।

तालिका 1.1 – श्रीमद्भगवद्गीता में शैक्षिक मूल्यों का माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के प्रभाव का विश्लेषण

क्र.	पद	अशासकीय						शासकीय					
		हाँ	%	नहीं	%	अनिश्चित	%	हाँ	%	नहीं	%	अनिश्चित	%
1	आप अपनी रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करते हैं।	404	89.38	34	7.52	14	3.1	368	90.2	28	6.86	12	2.94
2	आप समूह गतिविधियों में भाग लेते हैं।	398	88.05	39	8.63	15	3.32	360	88.23	33	8.09	15	3.68
3	आप सामाजिक कौशल विकसित करने का प्रयास करते हैं।	410	90.17	35	7.74	7	1.55	358	87.75	26	6.37	24	5.88
4	आप विद्यालय में टीमवर्क और संचार पर ध्यान देते हैं।	400	88.5	38	8.4	14	3.1	355	87.01	39	9.56	14	3.43
5	आप योग और ध्यान से मानसिक शांति प्राप्त करते हैं।	407	90.04	30	6.64	15	3.32	359	88	34	8.33	15	3.67
6	आप विद्यालय में विभिन्न संस्कृतियों की जानकारी प्राप्त करते हैं।	399	88.28	37	8.19	16	3.53	358	87.74	33	8.09	17	4.17
7	आप परिवार में सेवा को महत्व देते हैं।	405	89.6	35	7.75	12	2.65	361	88.48	30	7.35	17	4.17
8	आप सेवा और दया का भाव रखते हैं।	408	90.27	32	7.08	12	2.65	360	88.23	31	7.6	17	4.17
9	आप आत्म-नियंत्रण और धैर्य का अभ्यास करते हैं।	402	88.94	33	7.3	17	3.76	359	88	34	8.33	15	3.67
10	क्या आप जरूरतमंदों के प्रति संवेदनशील रहते हैं?	403	89.16	31	6.86	18	3.98	360	88.24	33	8.09	15	3.67
11	आप आलोचनात्मक सोच का प्रयोग करते हैं।	399	88.28	34	7.52	19	4.2	357	87.5	31	7.6	20	4.9
12	आप सृजनशीलता को बढ़ावा देते हैं।	401	88.72	36	7.96	15	3.32	358	87.75	32	7.84	18	4.41
13	आप सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास करते हैं।	416	92.04	20	4.42	16	3.54	349	85.54	39	9.56	20	4.9
14	आप शैक्षिक ईमानदारी का पालन करते हैं।	404	89.38	33	7.3	15	3.32	361	88.48	28	6.86	19	4.66
15	आप हमेशा कुछ नया सीखने का प्रयास करते हैं।	398	88.05	37	8.19	17	3.76	377	92.39	23	5.64	8	1.97
16	आप स्वाध्याय को महत्व देते हैं।	419	92.7	17	3.76	16	3.54	359	87.99	34	8.33	15	1.68

व्याख्या

92.7% अशासकीय और 87.99% शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी स्वाध्याय को महत्व देते हैं, जिससे उनमें आत्म-अनुशासन, जिज्ञासा और सतत अधिगम की प्रवृत्ति विकसित होती है। श्रीमद्भगवद्गीता का यह श्लोक इस आत्म-प्रयास और साधना के मार्ग को पुष्ट करता है। 92.04% अशासकीय और 85.54% शासकीय विद्यार्थी सर्वांगीण विकास के लिए प्रयासरत हैं, जिससे उनकी बौद्धिक, सामाजिक और नैतिक क्षमताएँ संतुलित रूप से उभरती हैं। यह शैक्षिक मूल्य उन्हें बहुआयामी व्यक्तित्व की ओर अग्रसर करता है। 90.27% अशासकीय और 88.23% शासकीय विद्यार्थी सेवा और दया का भाव रखते हैं, जिससे करुणा, संवेदना और परोपकार की चेतना का विकास होता है। यह गीता के निष्काम कर्मयोग का ही विस्तार है। 90.04% अशासकीय और 88% शासकीय विद्यार्थी योग और ध्यान के माध्यम से मानसिक शांति प्राप्त करते हैं, जो एकाग्रता, आत्मनियंत्रण और आंतरिक स्थिरता की भावना को पोषित करता है। यह श्लोक विद्यार्थियों को यह सिखाता है कि ध्यान, संयम और समभाव की साधना से ही मानसिक संतुलन, आत्मिक स्थिरता और कर्म के प्रति एकाग्रता संभव है।

"योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥" (गीता 2/48)

89.38% अशासकीय और 88.48% शासकीय विद्यार्थी शैक्षिक ईमानदारी का पालन करते हैं, जिससे उनके चरित्र में सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व और नैतिक प्रतिबद्धता प्रकट होती है। 89.16% अशासकीय और 88.24% शासकीय विद्यार्थी जरूरतमंदों के प्रति संवेदनशील हैं, जो सामाजिक उत्तरदायित्व, सहानुभूति और सहभागिता की भावना को दर्शाता है। 88.94% अशासकीय और 88% शासकीय विद्यार्थी आत्म-नियंत्रण और धैर्य का अभ्यास करते हैं, जिससे वे जीवन की चुनौतियों का विवेकपूर्ण और संतुलित ढंग से सामना करना सीखते हैं। 88.72% अशासकीय और 87.75% शासकीय विद्यार्थी सृजनशीलता को बढ़ावा देते हैं, जिससे उनके भीतर नवाचार, कल्पनाशीलता और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित होती है। 88.28% अशासकीय और 87.5% शासकीय विद्यार्थी आलोचनात्मक सोच का प्रयोग करते हैं, जो उन्हें तार्किक, विवेकशील और स्वतंत्र विचारक बनने की दिशा में प्रेरित करता है। यह श्लोक विद्यार्थियों को न केवल आलोचनात्मकता, बल्कि विवेकपूर्वक कर्म करने और निष्काम भाव से सीखने की प्रेरणा देता है।

"बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्॥" (गीता 2/50)

88.05% अशासकीय और 92.39% शासकीय विद्यार्थी हमेशा कुछ नया सीखने का प्रयास करते हैं, जो सतत अधिगम और आत्मविकास की ओर उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। 88.05% अशासकीय और 88.23% शासकीय विद्यार्थी समूह गतिविधियों में भाग लेते हैं, जिससे सहयोग, नेतृत्व, सहभागिता एवं सामूहिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास होता है। 89.6% अशासकीय और 88.48% शासकीय विद्यार्थी परिवार में सेवा को महत्व देते हैं, जिससे पारिवारिक मूल्यों, आदर एवं उत्तरदायित्व की भावना पुष्ट होती है। 88.28% अशासकीय और 87.74% शासकीय विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों की जानकारी प्राप्त करते हैं, जिससे विविधता में एकता, सहिष्णुता एवं वैश्विक दृष्टिकोण का विकास होता है। 90.17% अशासकीय और 87.75% शासकीय विद्यार्थी सामाजिक कौशलों के विकास का प्रयास करते हैं, जिससे संप्रेषण, सह-अस्तित्व एवं संबंधों की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। 88.5% अशासकीय और 87.01% शासकीय विद्यार्थी टीमवर्क एवं संचार पर ध्यान देते हैं, जो उन्हें सामूहिक कार्य, नेतृत्व और संवाद की क्षमता प्रदान करता है। 89.38% अशासकीय और 90.2% शासकीय विद्यार्थी रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करते हैं, जो नवाचार, आत्म-अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है। यह श्लोक विश्वास, संयम और अभ्यास के माध्यम से ज्ञान और शांति की प्राप्ति होती है, जो एक उत्कृष्ट विद्यार्थी के गुण हैं।

"श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥" (गीता 4/39)

VII. निष्कर्ष

- अशासकीय एवं शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी अपनी रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में सक्रिय हैं, जिससे उनकी कल्पनाशीलता, नवाचारशीलता एवं समाधान खोजने की क्षमता बढ़ रही है।
- वे समूह गतिविधियों में सहभागिता के माध्यम से सहयोग, समन्वय और सामूहिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास कर रहे हैं। विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल जैसे सह-अस्तित्व, संवाद-कुशलता और सहिष्णुता के गुण निरंतर पुष्ट हो रहे हैं।
- टीमवर्क और संचार के प्रति सजगता, उनमें नेतृत्व क्षमता, उत्तरदायित्व-बोध एवं पारस्परिक सम्मान की भावना को

विकसित कर रही है। योग एवं ध्यान के अभ्यास द्वारा वे मानसिक शांति, आत्मनियंत्रण और एकाग्रता को जीवन में आत्मसात कर रहे हैं।

- विभिन्न संस्कृतियों की जानकारी प्राप्त करने से वे बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण, वैश्विक नागरिकता और सहिष्णुता की भावना को पोषित कर रहे हैं। पारिवारिक सेवा और दायित्व के प्रति जागरूकता, उनमें अनुशासन, विनम्रता और करुणा जैसे गुणों को गहन बना रही है।
- सेवा और दया का भाव उनके भीतर सामाजिक उत्तरदायित्व, सहानुभूति और सहृदयता की भावना को विकसित कर रहा है। आत्म-नियंत्रण और धैर्य के अभ्यास से वे संतुलित निर्णय, तनाव प्रबंधन और आत्मबोध की ओर अग्रसर हो रहे हैं।
- जरूरतमंदों के प्रति संवेदनशीलता उन्हें सामाजिक रूप से उत्तरदायी, संवेदनशील एवं मानवतावादी बना रही है। आलोचनात्मक सोच के विकास से उनमें तार्किक विवेक, विश्लेषण क्षमता एवं सत्य की खोज की प्रवृत्ति उत्पन्न हो रही है।
- सृजनशीलता को प्रोत्साहन देकर वे नवाचार, आत्म-अभिव्यक्ति और व्यक्तिगत दक्षता की ओर बढ़ रहे हैं। सर्वांगीण विकास का प्रयास उनके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं नैतिक स्तर को समविकसित कर रहा है।
- शैक्षिक ईमानदारी का पालन वे आत्मानुशासन, सत्यनिष्ठा और चरित्रबल के माध्यम से कर रहे हैं। नवीनता की सीखने की प्रवृत्ति उन्हें ज्ञान-पिपासु, लचीले और समर्पित विद्यार्थी के रूप में विकसित कर रही है।
- स्वाध्याय के प्रति आग्रह उन्हें आत्मनिर्भर, गंभीर एवं ज्ञानोन्मुख बना रहा है। शासकीय एवं अशासकीय दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी श्रीमद्भगवद्गीता के शाश्वत शैक्षिक मूल्यों को अपने व्यवहार एवं व्यक्तित्व में आत्मसात कर रहे हैं। इन मूल्यों के समावेश से वे न केवल प्रबुद्ध और जिम्मेदार नागरिक बन रहे हैं, बल्कि एक नैतिक, संवेदनशील और आत्मविकसित व्यक्तित्व की दिशा में भी अग्रसर हो रहे हैं।

VIII. सुझाव

- विद्यालयीन पाठ्यक्रम में श्रीमद्भगवद्गीता के प्रेरणादायी श्लोकों को विद्यार्थियों की आयु, बौद्धिक स्तर और सामाजिक संदर्भों के अनुसार चयनित कर समदृष्टि, सहयोग, आत्मनियंत्रण, संवाद-कौशल जैसे शैक्षिक मूल्यों से जोड़ते हुए शामिल किया जाना चाहिए।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों को गीता के शैक्षिक-सामाजिक सन्दर्भों से युक्त श्लोकों का सहज, प्रभावी और

संवादात्मक तरीके से अध्यापन कराने हेतु प्रशिक्षित किया जाए, जिससे वे विद्यार्थियों में नैतिक अनुशासन, आत्मनिर्भरता और उत्तरदायित्व जैसे गुणों को विकसित कर सकें।

- विद्यालयों में सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं नैतिक शिक्षा कार्यक्रमों के अंतर्गत श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का भावार्थ सहित वाचन, नाट्य रूपांतरण अथवा संवाद रूप में प्रस्तुतीकरण करवाया जाए, जिससे विद्यार्थियों में सृजनशीलता, नेतृत्व क्षमता, आत्म-अभिव्यक्ति और सहभागिता का संवर्धन हो।
- पालक-शिक्षक संघ की बैठकों में यह सुझाव दिया जाए कि अभिभावक अपने घरों में बच्चों को अनुशासन, एकाग्रता, जिज्ञासा, सेवा-भावना, स्वाध्याय आदि से संबंधित श्लोकों के सरल व प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से नैतिक विकास में योगदान दें।
- प्रत्येक तिमाही में विद्यालय प्रमुख द्वारा शैक्षिक मनीषियों, गीता-विद्वानों या सामाजिक शिक्षा विशेषज्ञों को आमंत्रित कर विद्यार्थियों के साथ संवाद सत्र आयोजित किए जाएँ, जिनमें न्यायप्रियता, स्व-अनुशासन, बौद्धिक विवेक, और समदृष्टि जैसे मूल्यों पर चर्चा हो।
- बाल सभा, प्रार्थना सत्र या विशेष सभाओं में नियमित रूप से गीता श्लोक वाचन, अर्थ प्रस्तुति तथा सामाजिक व शैक्षिक मूल्य आधारित व्याख्यान आयोजित किए जाएँ।
- 'गीता अध्ययन एवं शैक्षिक मूल्य' शीर्षक से कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए, जिसमें विद्यार्थियों को समूह-कार्य, संवाद अभ्यास, केस स्टडी और प्रभावशाली नैतिक निर्णय जैसी गतिविधियों में सम्मिलित किया जाए।
- वाद-विवाद, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी, पोस्टर निर्माण, श्लोकों पर आधारित नाट्य रूपांतरण या स्टोरी टेलिंग जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए, जो विद्यार्थियों को शैक्षिक मूल्यों के व्यावहारिक उपयोग से जोड़ें।
- सप्ताह में एक दिन 'संवाद दिवस' घोषित किया जाए, जिसमें विद्यार्थी अपने अनुभव, मूल्य आधारित निर्णय या गीता के विचारों को साझा करें। साथ ही, अभिभावकों को प्रेरित किया जाए कि वे अपने बच्चों के साथ सप्ताह में एक बार नैतिक वार्ता-सत्र आयोजित करें, जिससे परिवारिक स्तर पर भी शिक्षा का नैतिक आयाम पुष्ट हो।

सन्दर्भ

- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद.
- एन.सी.ई.आर.टी. (2013). *शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद.

- कौल, लोकेश (2021). *शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ*. विकास पब्लिशिंग हाउस.
- गुप्ता, एस.पी. (2022). *शैक्षिक शोध एवं सांख्यिकी*. रतन प्रकाशन मन्दिर.
- गुप्ता, के.एल. (2020). *शोध प्रविधियाँ एवं सांख्यिकीय तकनीकें*. शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी.
- तिवारी, आर.एस. (2016). *शैक्षिक मूल्य और नैतिक शिक्षा*. भारती पब्लिकेशन.
- भारद्वाज, आर.के. (2020). *शोध पद्धति और शैक्षिक मूल्यांकन*. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल.
- मिश्र, रमेशचंद्र (2018). *शिक्षा दर्शन एवं शिक्षाशास्त्र*. विश्वविद्यालय प्रकाशन.
- शर्मा, रामनाथ (2017). *शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. विनय प्रकाशन.
- सक्सेना, एन.आर., मिश्र, बी.के., एवं मोहन्ती, आर.के. (2019). *शैक्षिक शोध की आधारशिला*. सुर्या प्रकाशन.
- त्रिपाठी, एस.एन. (2014). *भारतीय शिक्षा दर्शन*. लखनऊ: विद्यार्थी ग्रंथ भंडार.